

1	D	21	D	41	A
2	B	22	B	42	C
3	B	23	B	43	D
4	C	24	D	44	C
5	B	25	C	45	C
6	B	26	C	46	B
7	D	27	B	47	A
8	C	28	D	48	A
9	C	29	A	49	B
10	A	30	C	50	B
11	C	31	A		
12	C	32	D		
13	B	33	C		
14	C	34	C		
15	A	35	A		
16	C	36	C		
17	B	37	B		
18	C	38	B		
19	C	39	C		
20	B	40	B		

[Section: A]

→ पधेखंडीना भातुलाक्षमां अनुवाद करो. [04]

(1) युवतीमां पहिंवेलां ब्रूणखंडरना विवाहमाहे संन्यासनी हीला प्राप्त करी संन्यासनी जठरा

( मंडली शुद्धि ( गद्य - 15 )  
( लाक्षंतर ने ध्यानमां बाजवा )

(1) विदय: - हे आधारणीय गुरुगु।  
जगलमां सर्व गुणा लेन च अनुसर्तुं ठे  
( गद्य - 20 )

(2) → गद्यखंडवाची संस्कृत प्रश्नांना संस्कृतभाषां रवाज [04]

( हरेक प्रश्ना रवाजनी 1 गुण )

(1) एकः पूर्णः व्याधुः

(2) " श्री श्रीः पत्न्या । इदं सुवर्णकडकणं गृह्यताम् ।

(3) स्नाताः कुशाह्वताः च सरस्वतीं विष्णुम् ।

(4) यत् एतत् मायान् स्रभूयति, किन्तु  
अस्मिन् आत्मकवदेह प्रकृतिः न विद्यते ।

→ गुह्यवाची प्रश्नांना मातृभाषाभाषां उत्तर [04]

(3) कुंभीलक्ष विद्वेषणे ने प्रश्नाः ( हरेक उत्तरना 2 गुण )

(1) व्याज्जा कथारे अक्षरे - (2) समृद्धे जाभावी रसा कोण  
करे विद्वेषण रवाज - वसंतस्येना कुंभेवाभां सङ्ग. इयारे  
कुंभीलक्ष विद्वेषणे वसंतस्येना व्याजी हे लेन करे.

(4) परदेही वणिङ - तेनी पास लाकडाभांणी जनेसी,  
सुंदर ने कुलात्मक लेमच व्याखार, प्रकाश, वजन  
इप ने वंशभां व्याडसभाज हेजाववाणी तान पुतणीको  
( गद्य - 14 )

### [ Section - B ]

→ गद्यखंडांनी मातृभाषाभाषां अनुवाद [04]

(5) प्रवास दरम्यानता मित्र संघ. सुहृदघनी मित्र  
पत्नी. जीभावनी मित्र वैद्य. मरणा समयनी  
मित्र हाव ( पद्य - 5 )

(5) रिताडारी लोचनवाजा, मापूसरगा लोचनवाजा ने  
घोडे लोचन लेनारावी, वैद्ये निश्चित्सा कुरता  
नधी. लेका पात च पाताना वैद्ये हाथ हे.

( पद्य - 9 )

→ प्रश्नांना मातृभाषाभाषां उत्तर [04]

(6) एवढे सर्व सुख उपलब्धीनी सामग्रीची संपन्न -  
ज्ञान प्राप्ति माहे आरहानी समर्पना करे. कारणेक  
लेका सरस्वतीना महत्त्वने सारी वीते समगरे  
( पद्य - 6 )

[04] (7) नागना मस्तक चरला वधारे लेटली वेदना वधु.  
 ले मुकुल लौलिक मुझे चरला वधारे लेटला  
 दुःखा वधारे (पद्य - 10)

→ पद्यप्रति करी  
 (मेडली लसना 1/2 गुण कापी काकाय) [02]

[04] (8) सर्वं परवशं दुःखं सर्वमात्मवशं सुखम्  
 इति विदित्वा समाम्नेन क्लेशां सुखदुःखयोः ॥  
 (पद्य - 2)

→ अधीवस्तार कुकुल । [02]  
 लाक्षांतरः । गुण  
 समक्षतिः । गुण

(9) लाक्षांतरः चैत्र सईद कापड उपर लाल रंग अत्यन्त  
 सधावी तेम ज्यां जोसवानुं इण प्राप्त चाय त्यां न वाणी  
 प्रयोचवी : [पद्यः 7]  
 समक्षतिः सुभाषितामपुलिखद्वयः - वाणी त्यां न जोसवी  
 ज्यां उचित इण प्राप्त - चैत्र सईद कापड पर मे  
 लाल रंगची रंगवासां वाये ती लाल रंग सधावी -  
 तेम वाणीने पुन समक्ष - विचारी विवेकपूर्ती उपयोग  
 ज्यां जोसवानुं अत्य चणवाय त्यां न वचन जोसवुं

→ समीक्षात्मक टिप्पणी (इरेडन) 3 गुण) [06]  
 10. कुकुरीनि निर्दोषता : (गद्यः 13)

महाशिव लाल रचित 'प्रतिमानाटकम्' मां कुकुरीनि  
 प्राप्तुं उदात्तीकराण - लसत मत्प्राणची परत करती  
 प्रतिमाची पिताला हत्युनी आन - लेनुं करती  
 माता कुकुरी मान - लसत दुःखी ने माता प्रत्ये  
 गुस्मावाण - चयारे कुकुरी पीतानी आणाय वपट्ट  
 करी लसतने पीतानी निर्दोषता साजिल करे - ले  
 वारणताची समक्ष - मातानी इभावावना करे - म्पुणुधा  
 इरक्षर करे -

(10) महर्षि दयानंदुं प्रारंभिक ज्ञान ! (गद्यः 15)  
 महर्षि दयानंद अवहवी ल्वावतीय विद्याः 7 न

अभावही ज्ञान व्यंघात, ते जगानां तारतीय  
 अभावही त्यांत कुर्विले ते कुर्विले निर्दिष्ट  
 करवा व्हाईलनी करी. जगभावना व्युत्पत्ती  
 प्रमाणे

(11) लगवणना विविध स्वरूपे! (पृ. ६)  
 शीघ्रं सुप्तं तद्वै मं - व्याधुनक युगान्  
 व्याह लोचनार्थिकीन लगवणना विविध स्वरूपे  
 (1) अज्ञान (2) पाण्डुर (3) कडिया (4) व्याह  
 (5) पद्य (6) पशानिक (7) वाञ्छन (8) वैनिक

→ वासवर्ण स्पर्शिकर (हरीकना ३ गुण) [०६]  
 (लाघोतर: १२ गुण स्पर्शिकर २०२ गुण)  
 12 - अनुवाद: अंतोष पात्रीने जरी (पद्य - 18)  
 - अमर्षित: अमुक्त रचित 'मृच्छकटिकम्' नाटकमांची

13 - अनुवाद: क्षमुरनी माइक लघु पुष्पांभी (पृ. 3)  
 सर्व प्रकार वार ग्राहण करवे  
 - अमर्षित: श्रीमद्भागवत पुराणाना व्युत्पन्न दुपाख्यान  
 मांची गुरु, स्तातेयना शत्रु यदुन अनेक  
 गुरुवा हावा अर्थाने ते पिपीनी सुंदर प्रसंग  
 गुरु स्तातेय आनंदगुं कारण आपता कड्युं मारा  
 व्यापीसु गुरुवरी पात्रांची मने के ज्ञान मळ्युं लेन।  
 कारणे हुं प्रसवण - क्षमुर गुरु नाणा - माटे  
 पुष्पांभी वस लेम माणस नाणा - माटे वाक्छांभी  
 वार ग्राहण।

अथवा

13 अनुवाद: शतावरी, जनी अग्निमां होम करे (पद्य 4)  
 \* अमर्षित: महाकाव्य ताराव रचित महाकाव्य  
 किराला मुनीयम् मांची - हूलमां हारी पांड्या  
 पत्रमां त्यार ह्येविलनी प्रभलनी माण्डारी माटे  
 युधिष्ठिर वनवासिनी गुप्तार जनावी इम्बितापुर  
 मोडल्या, व्हावने माण्डारी व्याप त्यार युधिष्ठिर  
 माण्डारी ने पत्नीची व्याध मंताला - अथ वाञ्छित  
 ची शीघ्री गुरुस घई ३ उपाख्यान व्याप तनु  
 पाठान।

→ धिवरणात्मक धिपानी (हरकना 1 गुण) [05]

14 मेधा : (पद्यः 1)  
धिवरणात्मक जुष्टि, कामुक धिषयने धिवरणा  
धिवरणा जुष्टि ले मेधा, कना पर काम, कुष्टि  
धिवरणा काम न धाय ले जुष्टि जुष्टि

15 प्रदीक्षणा : (गद्य - 14)  
इरा, कुष्टि पद्यं कु वस्तुने पातानी  
दक्षिण कु कुमहरी दिक्कामां धाजनि गीण गीण  
इरुं ले प्रदीक्षणा, धिवरणा संस्कारमां यज्ञकुंडली  
मां रहेला कामनी धार जावु इरुं ले प्रदीक्षणा.

→ परिबध्यात्मक नोधि [Section - D] (हरकना 3 गुण) [06]

16 दुर्ध्वरितम् : महाकाव्य जालालदु लजलुं सत्राट  
दुर्ध्वं गुण - आध्यायिका प्रकारनुं गद्यकाव्य -  
आठ उरुकाव्य - पाताना कुणना गीरवगान -  
सत्राट दुर्ध्वरितना। ~~कामनी~~ मध्या ल्यार  
प्रतिष्ठाध्यायी रूपट पक्षपुत्पने लीधे प्रतिष्ठा  
आ कुलि कुष्टि कारणावर अधरी रही

16 कुमारसंलपम् : अध्या  
महाकाव्य कालिदासनुं महाकाव्य  
कुल न कर्गे - लारकासुर ना तामधी  
नकी हेवा सभा पान्ने कुमार नी उत्पत्तिधी  
लारकासुर नी वधि - शिव ने पार्वतीना  
लण - कामदेव ने शिपना अदथमां  
प्रपाथलाव प्रगत कुरवा नगावपुं - शंकरमगाव्य  
निनेत जोली कामदेवने जाणी हेवा

17 महाभारत : धर्म, कार्य, काम अने मोक्ष विरो  
नी अही हे ले व अनयत्र, पूना अही कुडवारुं  
नधी ले कथांय नाहि - 'पांचमा वध -  
राष्ट्रीय धिवरणा काव्य - प्राचीन लारतीय  
संस्कारना विषय-काव्य - महर्षि वेद व्यासने  
रथना - सुगला अंक लान रलोकी - अठार पर्व  
ना आधुति 'जय', 'भारत' ने 'महाभारत'  
अध्या

17. पचास मिहिरः जगज्जिदियाना व्यत्यंत प्रतिभाशाली  
 आचार्य - पद्यसिद्धांतिका, बृहज्जालक व्यन  
 बृहत्सिद्धिनामना राज गंधनी व्यन -  
 पद्यसिद्धांतिका नामना गंधनी लीध वेदांग  
 जगज्जिदियाना लई पचासमिहिर सुधीन  
 हीध परंपरानी माहिली - भगवान् सूर्यना पुत्र -  
 सूर्यनी प्रसन्नलाधी शाननी प्राप्ति

18. रामायणः क्व दूषण धरावती होवा हतां  
 निर्दोष - आदिशिव वाहनीकेनी व्यदित्तीय हति  
 आदिशिव्य - समाजना दंडतरु कार्य - साक्षात्  
 जगज्जिदियाना प्रार धर वाहनीकेनी रामायण  
 व्यनना. इरवा - आत डांड - व्योवीस इभर रलेडी

→ सुवनानुसार उत्तर (हरिकण, २ गुण) [ 02 ]  
 19. रज्जुसर्पव्यायः 'रज्जु' दारुं नो संप [ 02 ]  
 अरल व्याप. अंधारात्रा पडला. दारुंन माहिस  
 व्याप नी ज्ञाति - हीड व्यपनेनी पस्तु इ  
 जाजतमा मागस वयार पातानी भावयता प्रमाणीनी  
 धारणाने पचा वर्तन ल्यार दुःख. मनुष्यवर्ग संभोगी  
 अनुसार व्यवहार इरवा.

20. विरोधिः ( उ.दा. - 1 गुण, अमरिः 1 गुण [ 02 ]  
 विरोधि न होवा हतां क्या। विरोधि ह्यावत  
 पयनी आवे, ता विरोधि. अलंकार  
 उ.दा आशा नाम शनुष्याणां काचिद् आशयर्थशुद्धयत्का।  
 यथा यथाः प्रधायना, मुबलासिलहृति पडंगुवत ॥

21. पंचमथ उच्यः ( लक्षणाः 1 गुण, उ.दाः 1 गुण ) [ 02 ]  
 \* लक्षणाः जता कु पंचमथमुदीरलं, पुरी।  
 ज ल म र ( 1 र व्यक्षरी )  
 उ.दा परं पं व व्याध्रगजवह्निवापलं।  
 दुर्भाकथः पतफक 18 वुभाजवम ॥